B.A(H) Part-1

अभिप्रेरणा (Motivation)

- Dr. B. Kr

अभिप्रेरणा या प्रेरणा एक आंतरिक अवस्था है जो प्राणी को किसी खास प्रकार के व्यवहार करने के लिए उत्सुक करती है। भूख एवं प्यास आंतरिक अवस्था है, इसलिए इन्हें प्रेरक कहा जाता है।

अभिप्रेरणा को सबसे अच्छे ढंग से "शेटस" ने परिभाषित किया है उनके अनुसार "प्रेरकों का अर्थ प्राणी की शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक अवस्थायें हैं, जो उसे निश्चित दिशा में कार्य करने हेतु तत्पर करती है।"

उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर कहा जा सकता है कि -

(i) प्रेरक शारीरिक और मानसिक होती है।

(ii) प्रेरक प्राणी को सक्रिय बनाती है।

(iii) प्राणी अनेकानेक क्रिया कर लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तत्पर रहता है।

(iv) ~~वह~~ उपरोक्त तत्परता तब तक ~~[illegible]~~ ~~नहीं~~ खत्म नहीं होता है जब तक निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाय।

लक्ष्य दो प्रकार के होते धनात्मक लक्ष्य तथा नकारात्मक लक्ष्य कहा जाता है। धनात्मक लक्ष्य उसे कहते है जिसे प्राणी प्राप्त करना चाहता है। जैसे- एक भूखे व्यक्ति के लिए भोजन धनात्मक लक्ष्य है। नकारात्मक लक्ष्य उसे कहते हैं जिससे प्राणी बचने का प्रयास करता है। जैसे- खतरा से प्रत्येक प्राणी बचना चाहता है।

आवश्यकता, प्रणोदन तथा प्रोत्साहन (Need, drive and incentive)

(क) आवश्यकता (need) - हमें अपने जीवन-यापन के लिए अनेक चीजों की जरूरत होती है जिसे आवश्यकता कहते हैं; 'हल' के अनुसार शरीर में किसी वस्तु के अभाव से जो एक विशेष अवस्था उत्पन्न होती है उसे आवश्यकता कहते है।'

आवश्यकता दो प्रकार के होते हैं-

(i) जो आवश्यकतायें प्राथमिक तथा जन्मजात होती हैं उन्हें अनिवार्य आवश्यकता कहा जाता है। इस प्रकार की आवश्यकताओं को शारीरिक